International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org December- 2016, Volume-3, Issue-6 Email- editor@ijesrr.org

"कानपुर नगर में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की पंथ निरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

बनवारी लाल यादव
शोधार्थी
श्री वेंकटेशवर विश्वविद्यालय, गजरौला

डॉ0 ऋतु भारद्वाज
शोध निर्देशिका
श्री वेंकटेशवर विश्वविद्यालय, गजरौला

मनुष्य एक सामाजिक इकाई है। प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन एकांकी रूप से नहीं बिता सकता है उसे अन्य लोगों से सम्पर्क करने की आवश्यकता होती है। जब व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है। तो आपसी सम्पर्क एक विशिष्ट समाज का निर्माण करता है। वह समाज में ही जन्म लेता है और धीरे–धीरे बड़ा होकर सामाजिक नियमों को ग्रहण करके वह समाज का स्थायी सदस्य बन जाता है। समाज में वह सुख–दुख, कटुता, प्रेम, मिठास, ईर्ष्या, द्वेष आदि का अनुभव करता है। समाज में उसे अन्य विभिन्न प्रकार की समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। इस प्रकार सामाजिक अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं से गुजरते हुए, मनुष्य अपनी जीवनरूपी नाव को आगे बढ़ाता जाता है। संसार रूपी इस समुद्र में जो व्यक्ति सुख–दुख रूपी ज्वार भाटों से अपनी नाव को सफलतापूर्वक चला लेता है, वही सच्चा व सफल व्यक्ति माना जाता है।

शिक्षक बाल पौध के कुशल माली होते हैं तथा राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं व्यक्तित्व के गुणों का विकास विद्यालय में कक्षा शिक्षण पर निर्भर करता है। इसी प्रकार विद्यालय में कक्षा शिक्षण के गुण शिक्षक के शैक्षिक–गुणों पर निर्भर करते हैं। एक अध्यापक के शैक्षिक गुण उसके विषय सामग्री के पूर्ण अध्ययन एवम् गहनतम जानकारी पर निर्भर करते है।

उस देश के बने बनाये स्वरूप पर प्रभाव डालती है और इसी प्रभाव के कारण ही स्वरूपों में बदलाव आता है। भारत एक 'ईश्वरवादी चिन्तनवाला' देश है। इस देश में सन्तानोत्पत्ति को रोकना एक दुष्कार्य माना जाता था। समय के साथ–साथ इस प्रकार की विचारधारा में परिवर्तन आया। मनुष्यों की बढ़ती हुयी आवश्यकताओं ने जनसंख्या वृद्धि की दर के विषय में चिन्तन को एक नया मोड़ दिया।

सम्बन्धित साहित्य

राष्ट्रीय सहारा पत्रिका ने जून 1993, में पंथनिरपेक्षता पर एक सर्वेक्षण पूरे **उत्तर प्रदेश** में किया। उसका परिणाम यह था कि आम जनता तथा बुद्धिजीवी वर्ग पंथनिरपेक्षता को राजनीति से अलग मानते है ओर उन्होंने ऐसे दलों का बहिष्कार किया तथा उसे हटाने की मांग की जो दल धर्म के नाम पर भ्रान्तियां पैदा कर रहे हैं।

तुसी, 2000 ने सामाजिक चेतना का भाषा व सामाजिक यथार्थता से सम्बंधों का अध्ययन किया। यह अध्ययन स्टार हॉक का दर्शन (Starhawk's Philosophy) भाषा, सामाजिक चेतना में वृद्धि करता है और सामाजिक चेतना, सामाजिक यथार्थता पर केन्द्रित है। यह शोध अध्ययन (Starhawk's Belief) का समर्थन करता है कि भाषा एक व्यक्ति के स्वयं के प्रत्यक्षीकरण में निर्धारक कारक है और यह प्रत्यक्षीकरण उसकी सामाजिक चेतना में यथार्थता का विकास करती है। इस प्रकार भाषा, सामाजिक चेतना व सामाजिक यथार्थता तीनों सार्थक रूप से सह–सम्बन्धित है।

माइलम एण्ड हरटडो, 2001, ने सामाजिक चेतना के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया। और पाया कि वर्तमान की ज्वलंत समस्यायें – बेरोजगारी, मंहगाई, भ्रष्टाचार, आंतकवाद इत्यादि जनसामान्य की सामाजिक चेतना की निर्धारक कारक होती है। एक व्यक्ति का किसी समस्या के प्रति जैसा प्रत्यक्षीकरण होता है वैसी ही उसकी सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति होती है।

डब्ल्यू.ई.बी. दुहिस, 2003 ने अफ्रीकी मूल के लोगों की दोहरी सामाजिक चेतना का अध्ययन किया। यह अध्ययन अफ्रीकी मूल में लोगों के जीवन, पूर्वाग्रह से ग्रसित अमरीकी समाज के गोरे व काले लोगों के बीच संघर्ष पर केन्द्रित है। यह अध्ययन इस पर विचार करता है किस प्रकार अफ्रीकी मूल के लोग दोहरी सामाजिकता चेतना के साथ अपना दिन–प्रतिदिन का जीवन जीते है। पहली सामाजिक चेतना कि अफ्रीकी मूल में लोग अपनी समृद्ध अफ्रीकी संस्कृति परम्पराओं पर गर्व महसूस करते है। वहीं दूसरी सामाजिक चेतना के प्रति वे लोग पूर्वाग्रह से ग्रस्त अमेरिकी समाज से अपने आपको अलग–अलग सा महसूस करते है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला कि आज 21वीं सदी में प्रारम्भ में भी अफ्रीकी मूल वाले लोगों व अमेरिकों मूल में सफेद लोगों के दिन प्रतिदिन में जीवन में कहीं न कहीं गोरे व काले लोगों

के बीच संघर्ष की भावना विद्यमान है। तथा अफ्रीकी मूल के काले लोग, अमेरिकी मूल के सफेद लोगों से अलग–थलग महसूस करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

संसार में कोई भी क्रिया निरूद्देश्य नहीं होती है लक्ष्यविहीन प्रयासों के परिणाम निरर्थक होते हैं। हमारे समाज में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए उनके जीवन में भिन्न–भिन्न पहलुओं का सार्थक प्रभाव होना चाहिए इसलिए उपरोक्त शोधकार्य को उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए निम्न उद्देश्य निर्धारित किए जाऐंगे :–

1. कानपुर नगर में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
2. कानपुर नगर में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएं

1. अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं) की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निर्मित उपकरणों के अवलोकोपरांत ज्ञात हुआ कि अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति से सम्बन्धित केवल एक ही मानकीकृत परीक्षा उपलब्ध है :–

अंशु मेहरा और दुर्गानंद सिंह, पंथनिरपेक्षता अभिवृत्ति मापनी (एम0सी0 एस0ए0एस0)

जबकि सामाजिक चेतना से सम्बन्धित कोई भी मानकीकृत परीक्षण उपलब्ध न होने के कारण शोधकर्ता ने शोध पर्यवेक्षक के निर्देशन में सामाजिक चेतना अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ

मध्यमान :– मध्यमान को अंकगणितीय माध्य अथवा औसत भी कहा जाता है। जब किसी अंक सामग्री के समस्त अंकों के योगफल को उन अंकों की संख्या से भाग देकर जो भागफल प्राप्त होता है, उसे ही मध्यमान कहते हैं।

फरग्यूसन के अनुसार :– **''मध्यमान संख्याओं के कुल योग को उनकी संख्या से भाग देने पर प्राप्त होता है।''**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान वर्गीकृत आंकड़ों द्वारा छोटी विधि से निकाला गया है।

lw= %&

$$M = AM + \frac{\Sigma fd}{N} \times C.I.$$

M	=	मध्यमान
AM	=	कल्पित मध्यमान
Σ	=	योग
N	=	आवृत्तियों का कुल योग
C.I.	=	वर्गान्तराल
Σfd	=	आवृत्तियों व उनके विचलन के गुणनफल का योग
f	=	आवृत्ति
d	=	कल्पित मान वाले वर्ग से प्राप्त प्राप्तांकों का विचलन

मानक विचलन

मानक विचलन, जिसे प्रामाणिक विचलन भी कहते हैं, विचलनशीलता के लिए सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला गुणांक है। यह सभी प्राप्तांकों के उनके मध्यमान से लिये गये विचलनों के वर्गों के औसत के वर्गमूल को मानक विचलन कहते हैं। मानक विचलन को S.D. या (ग्रीक अक्षर σ) से व्यक्त करते हैं। इसका प्रयोग सर्वप्रथम **कार्ल पियर्सन** ने किया।

न्यादर्श

प्रत्येक शोधकार्य हेतु जनसंख्या का निर्धारण करना अति आवश्यक होता है। इसी जनसंख्या के सर्वेक्षण से तथ्य एवं प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु **"प्रो० एच० एन० मिश्रा कॉलेज ऑफ एजूकेशन, कानपुर"** से सम्बन्धित कानपुर नगर के **"बी०एड० महाविद्यालय" के सत्र 2014–15** में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों **(छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं)** को शोधकार्य की जनसंख्या माना गया है।

तथ्य संकलन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में तथ्य संकलन हेतु व्यक्तिगत साक्षात्कार, प्रश्नावली, दूरभाष यन्त्र और नियन्त्रित पर्यवेक्षण शोध उपकरण प्रयोग किये गयें।

तथ्य विश्लेषण एवं निष्कर्ष

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण सह–सम्बन्ध के आधार पर किया गया।

शोध परिकल्पना (H_1) :– अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है :–

$$H_1 = \mu_1 - \mu_2 \neq 0$$

शून्य परिकल्पना (H_{01}) :– अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है :–

$$H_{01} = \mu_1 - \mu_2 = 0$$

तालिका – 1

अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–

प्रतिदर्श	छ	ड	ैण्क्ण	क	σक	ज	ब्ण्त्ण टंसनम	सार्थकता स्तर
सामान्य जाति	65	128ण्53	11.65	1.17	2.46	.47	जण्05 त्र 1ण्97 जण्01 त्र 2ण्60	0.05 व 0.01 दोनों स्तरों पर असार्थक
अन्य पिछड़ा वर्ग	55	127ण्36	14.81					
निष्कर्ष		भ्4ण्1 रू μ_1 . $\mu_2 \neq 0$ ण्05 व 0ण्01 दोनों स्तरों पर अस्वीकृत भ्4ण्01 रू μ_1 . μ_2 त्र 0 ण्05 व 0ण्01 दोनों स्तरों पर स्वीकृत						

क्योंकि t का परिगणित मान .47 है जो कि द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के लिए .05 स्तर पर सारणी मान 1.97 तथा .01 स्तर पर 2.60 दोनों से कम है तथा दोनों स्तरों पर t का परिगणित मान असार्थक है। अतः शोध परिकल्पना– ''अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है'', अस्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना – ''अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं, स्वीकृत की जाती है।

दोनो समूहों का मध्यमान, मानक स्तर (NORMS) 130 से कम है अतः पंथनिरपेक्षता के प्रति अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत अन्य पिछड़े वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता में प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते है।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़े वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की पंथनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है और दोनों समूहों के मध्यमानों में अवलोकित अंतर प्रतिचयन त्रुटि के कारण है।

अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यपक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत पिछड़े वर्ग के छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओं पंथनिरपेक्षता के प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते हैं।

शोध परिकल्पना (H_2):– अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है :–

$$H_2 = \mu_1 - \mu_2 \neq 0$$

शून्य परिकल्पना (H_{02}):– अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है :–

$$H_{02} = \mu_1 - \mu_2 = 0$$

तालिका – 2

अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–

प्रतिदर्श	छ	ड	ˆण्क्ए	D	σ_D	t	C.R. Value	lkFkZdrk Lrj
सामान्य जाति	65	162.61	32.97	9-58	6-07	1-57	t.05 = 1.97	0-05 o 0-01 nksuksa Lrjksa ij
अन्य पिछड़ा वर्ग	55	153.03	33.29				t.01 = 2.60	

								vlkFkZd
निष्कर्ष	ҥ$_{8ण1}$ रू μ_1 . $\mu_2 \neq 0$ ण05 व 0ण01 दोनों स्तरों पर अस्वीकृत ҥ$_{8ण01}$ रू μ_1 . μ_2 त्र 0 ण05 व 0ण01 दोनों स्तरों पर स्वीकृत							

क्योंकि t का परिगणित मान 1.57 है जो कि द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के लिए .05 स्तर पर सारणी मान 1.98 तथा .01 स्तर पर 2.60 दोनों से कम है तथा दोनों स्तरों पर t का परिगणित मान असार्थक है। अतः शोध परिकल्पना–''अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है'', अस्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना–''अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं, स्वीकृत की जाती है।

दोनो समूहों का मध्यमान, मानक स्तर (NORMS) 150 से कम है अतः सामाजिक चेतना के प्रति अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत अन्य पिछड़े वर्ग के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना में प्रति समान रूप से तटस्थ अभिवृत्ति रखते है।

अतः इससे यह स्पष्ट है कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य जाति के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं तथा अनुदानित एवं गैर अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् अन्य पिछड़े वर्ग के छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक चेतना के प्रति समान रूप से सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वुच, एम. वी. – तृतीय सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली एन. सी.ई.आर.टी. 1987
2. वुच, एम. वी. – चतुर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली एन. सी.ई.आर.टी. 1991
3. गुप्ता, एस0पी0 – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबार, शारदा पुस्तक भवन, 2005
4. सिंह, अरूण कुमार – मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना, मोतीलाल बनारसीदास, 2002
5. राय, पारसनाथ – अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 2006
6. श्रीवास्तव, डी.एस. – अनुसंधान विधियाँ, आगरा, साहित्य प्रकाशन, 2006
7. चन्द्र विपिन – आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, 1996